Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

M. A II Sem
CC-07 : Gandhian Philosophy

"Sarvodaya" (सर्वोदय)

1
NOVEMBER
2013
FRIDAY 01

समकालीन दार्शनिक चिन्तन में गाँधीजी का सर्वोच्च स्थान है। गाँधीजी में एक साधक की विशिष्ट भावना का, एक योगी के तपोबल का तथा एक भक्त की भगवान में श्रद्धा आत्मा का अद्भुत संगम है। इस प्रकार के पवित्र संगम से आलोकित होकर गाँधी ने सर्वोदय का स्वप्न देखा। राजनीति जिसका अंत आज तक के मानव इतिहास में कूटनीति से तादात्म्य था उसे गाँधी ने 'धर्मनीति' का एक नया आयाम दिया। गाँधी वे अपनी आत्मकथा के अंत में लिखते हैं कि सत्य की विशुद्ध एवं सर्वव्यापिनी आत्मा का साक्षात्कार करने के लिए व्यक्ति को अधिक तुच्छ वस्तु से तादात्म्य स्थापित करने की योग्यता आवश्यक है। वह व्यक्ति जिसे इस प्रकार की अभिलाषा है वह जीवन के किसी भी क्षेत्र से अपने को अलग नहीं कर सकता।

गाँधीजी में सर्वोदय की भावना रस्किन की पुस्तक "अन्टू दिस लास्ट" को पढ़ने से जगी थी। इस पुस्तक का गहरा प्रभाव गाँधीजी पर पड़ा था। गाँधीजी ने इस पुस्तक से तीन सिद्धान्त सीखे थे :—

1. सबके भले में अपना भला है। "That the good of the individual is contained in the good of all."

आजीविका की आवश्यकता सबको होती है। वकील के काम का और नाई के काम का मूल्य एक समान है क्योंकि दोनों का आजीविका कमाने का अधिकार है। "That lawyer's work has the same value as barber's in as much as all have the same right of earning livelihood from their work."

"श्रमिकों का मजदूरों का किसानों का जीवन सच्चा है। "That the life

of labour i.e the life of the tiller of the soil and the handicrafts man is the life worth living.

गाँधीजी में सर्वोदय को सर्व मानव कल्याण से सम्बद्ध। गाँधीजी के समाज परिवर्तन का लक्ष्य शोषण पर आधारित संस्थाओं का अन्त कर एक आदर्श समाज की रचना करना है। वे ऐसा समाज की रचना करना चाहते हैं जिसका आधार अहिंसा हो, जिसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता और आस्था सुरक्षित हो तथा आपस में सभी के बीच प्रेम और सहयोग की भावना हो। इस अहिंसक समाज को इन्होंने सर्वोदय समाज की संज्ञा दी।

सर्वोदय का आधार हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनेक विचारों में छिपा है। वेद में सभी प्राणियों के उदय की चर्चा है। महाभारत के "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया: सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःख भाग भवेत्"।। में सर्वोदय का भाव छिपा है। ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किंचित जगत्यां जगत्, तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्। तथा गीता के आत्मवत सर्वभूतेषु और सर्वभूतहितरता: में सर्वोदय का ही भाव है। परन्तु स्पष्ट रूप से सर्वोदय का प्रयोग सर्वप्रथम जैनाचार्य समन्तभद्र ने सर्वोदय तीर्थ के रूप किया था। सर्वोदय एक व्यापक अर्थ रखता है जो मानव कल्याण की भावना से भरा है। गाँधीजी ने एक ऐसे समाज की कल्पना की जहाँ समानता हो तथा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का

शोषण का कार्य। गांधी जी एवं मार्क्स दोनों करीब दिखते हैं। किन्तु दोनों में अन्तर यह है कि मार्क्सवाद मानव के आर्थिक पहलू पर बल देता है तथा नैतिक पक्ष को नकारता मानता है। वहीं गांधीजी ने सत्याग्रह का सही विवेचन और सही दर्शन सर्वोदय में दिया। सर्वोदय की स्थापना राज्यशक्ति के द्वारा नहीं हो सकती बल्कि भूदान ग्रामदान आंदोलन तथा इसी प्रकार की दूसरी प्रक्रियाओं द्वारा नैतिक वैचारिक एवं जीवन मूल्यों में क्रान्ति के द्वारा ही हो सकती है।

सर्वोदय का तात्पर्य है, सबका उदय। इसकी तुलना Mill और बेंथम के उपयोगितावाद से की जा सकती है। उपयोगितावाद की मान्यता है, "अधिकतम संख्या में अधिकतम सुख", प्राप्त करना। सर्वोदय की भी यही मान्यता है, किन्तु दोनों में अन्तर है कि उपयोगितावाद 'सुखवाद' का सिद्धान्त है, जिसका लक्ष्य सुख है। इसमें अधिकतम सुख की कल्पना की गई है किन्तु मूलतः यह सिद्धान्त व्यक्तिवादी या आत्मनिष्ठ है। किन्तु सर्वोदय के साथ ऐसी बात नहीं है। यह व्यक्तिवादी तथा आत्मनिष्ठ सिद्धान्त नहीं है। सर्वोदय सभी की सुख की बात करता है और सभी के सुख में ही अधिकतम संख्या में अधिकतम सुख निहित है।

उपयोगिता का आधार स्वार्थ है, जबकि सर्वोदय का आधार प्रेम है। इसमें आत्मोत्सर्ग निहित रहता है, जबकि उपयोगितावाद में आत्मसुख प्रमुख रहता है। गांधी के अनुसार यह तभी संभव है जब पंचायत राज्य हो। छोटे-छोटे कस्बों और गाँवों के लोग आपस में मिलकर पंचायत

का संगठन करें और सभी व्यक्तियों के उत्थान की बात सोचें।

सर्वोदय की मान्यता है कि सभी व्यक्ति मूलतः एक ही स्रोत से उत्पन्न हैं तथा सभी व्यक्ति समान हैं। गांधीजी का कहना है कि सर्वोदय को भारतीय आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में देखना उपयुक्त जान पड़ता है। भारतीय दर्शन की विशेषता है कि वह सभी व्यक्तियों को एक ही ईश्वर द्वारा निर्मित तथा सभी में समान आत्मा को विद्यमान पाता है। जब सभी में समान आत्मा है तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि सभी व्यक्ति समान हैं। समानता की कोई भी बात जो कृत्रिम समानता पर आधारित है बहुत हद तक कारगर सिद्ध नहीं हो पाती। किन्तु भारतीय दर्शन की यह विशेषता है कि सभी में समान आत्मा की बात कहकर एक प्रकार से आध्यात्मिक समाज की बात करता है और सर्वोदय को इसी आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में देखना उचित है। गांधीजी का मत है कि भूमि पर भी किसी व्यक्ति का अधिकार नहीं है, बल्कि भूमि पर सबका समान अधिकार है। गांधीजी की परिकल्पना में सर्वोदय की रूपरेखा – गांधी जी स्वयं लिखते हैं " यदि हम चाहते हैं कि हमारा सर्वोदय अर्थात सच्चे लोकतन्त्र का सपना साकार हो तो हम छोटे से छोटे भारतवासी को भारत का उतना ही शासक समझेंगे जितना देश के बड़े से बड़े आदमी को। कोई किसी को अछूत नहीं समझेगा.... हम मेहनत करने वाले मजदूरों और धनी पूंजीपतियों को समान समझेंगे सबको अपने पसीने की कमाई से ईमानदारी

वे मानसिक और ... सामान्य भोजन करेंगे। प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक श्रम के लिए तत्पर रहेगा। अपने प्राण देने को तैयार रहेगा, किन्तु दूसरों की जान लेने की इच्छा कभी नहीं रखेगा। गाँधी जी के अनुसार "सर्वोदयी लोकतंत्र अनगिनत गाँवों का बना होगा। सर्वोदयी लोकतंत्र का समाज समुद्र की लहरों की तरह एक के बाद एक घेरे की शक्ल का होगा जिसका केन्द्र व्यक्ति होगा। व्यक्ति गाँव के लिए और गाँव ग्राम समूह के लिए मर मिटने को हमेशा तैयार रहेगा।" सच्चे लोकतंत्र का संचालन केन्द्र में बैठे हुए बीस आदमियों से नहीं हो सकता। इनका संचालन नीचे से प्रत्येक गाँव के लोगों द्वारा करना होगा।

लोकतंत्र में पार्टी का सर्वोदय प्रतिनिधिमूलक का अधिनायकत्व रहता है। अतः सर्वोदय अधिनायकवाद या कैबिनेट राज्य में पार्टी विहीन लोकतंत्र की कल्पना गाँधीजी ने की थी।

2. पार्टी रहित लोकतंत्र की प्राप्ति के लिए चार साधन है।

(क) ग्राम पंचायतों की स्थापना।

(ख) कोई व्यक्ति पद के लिए नहीं खड़ा होगा।

(ग) सर्वोदय आन्दोलन का अन्तिम चरण पार्टी रहित लोकतंत्र है।

(घ) संसद या धाराओं में पार्टी का प्रतिनिधि त्यागकर राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करना होगा।

गाँधी जी के मतानुसार सर्वोदय का अर्थ एक आदर्श समाज व्यवस्था से है जिसका आधार सार्वलौकिक प्रेम है। इसलिए इसमें राजा और रंक अमीर-गरीब सभी कोई साथ हु

किसी भी व्यक्ति या समूह का दमन, शोषण या विनाश नहीं किया जायेगा। सर्वोदय के भूदान के द्वारा सबके कल्याण का उत्थान होगा। सर्वोदय का आधार आध्यात्मिक होने के कारण इसकी सिद्धि साधन भी आध्यात्मिक है। गांधी जी का कहना है कि जो यह कहते हैं कि धर्म का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है वास्तव में धर्म के वास्तविक अर्थ को नहीं जानते। इसप्रकार गांधी तत्व मीमांसा एवं ज्ञान मीमांसा के शास्त्रीय विवेचन में न पड़कर बिना किसी दार्शनिक अनुशासन विशेष से सम्बन्ध हुए एक साधक एवं भक्त के रूप में तत्व एवं ज्ञान का विवेचन करते हैं। सर्वोदय के परिप्रेक्ष्य में गांधी की अपनी एक दृष्टि है अतः इस दृष्टि से इन्हें एक समाज दृष्टा कहा जा सकता है। महात्मा गांधी के अनुसार सर्वोदय समाज की वेदी पर व्यक्ति की हत्या नहीं करता। सर्वोदय मानव को एक विशिष्ट स्थान देता है। इसप्रकार गांधी का सर्वोदय व्यक्ति की गरिमा की रक्षा करते हुए पूरे समाज के सर्वोत्थान की बात करता है कि गांधी का सर्वोदय साम्यवाद मार्क्स की कमियों एवं उसकी सीमाओं से ऊपर उठता है।

महात्मा गांधी मानवतावादी भी हैं। गांधी पूरे मानव समुदाय के दुःख दर्द के प्रति संवेदनशील हैं। उन्होंने मानव को विशेषकर दलितमानवों को ऊपर उठाने पर जोर दिया। एक समाजसेवी की तरह इन्होंने मानव कल्याण को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। इनका सर्वोदय दर्शन इस बात का प्रमाण है। गांधी सदैव सभी के उत्थान, कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। इनका सर्वोदय दर्शन मानवतावाद की पराकाष्ठा है। सामाजिक

तत्वज्ञान में अहिंसा को भारत की विशेष देन माना जा सकता है। जिसकी जड़ें तो लगभग तीन हजार वर्ष पहले पड़ चुकी थी जब बुद्ध और महावीर ने प्रेम और अहिंसा का उपदेश देने के लिए प्रयाण किया था।

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि महात्मा गांधी सर्वोदय को आदर्श राज्य के रूप में मानते हैं और उसी सर्वोदय की स्थापना के लिए अपने सामाजिक राजनीतिक और नैतिक आदर्श को हमारे समक्ष रखते हैं। अगर सर्वोदय की स्थापना हो जाती है तो इसका अर्थ होगा इस पृथ्वी पर स्वर्ग की स्थापना। अहिंसा तथा सत्याग्रह के साधनों से ही सर्वोदय का आदर्श प्राप्त करना संभव है।